Vol 4 Issue 8 Feb 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

पदम्भूषण उस्ताद हाफिज़ अली खाँ साहब के सरोद वादन की विशिष्टता

Poonam Suryal

Department of Music, Panjab University, Chandigarh.

सारांश : सरोद वादन के श्रेत्र में गौरव महापुरूषों में सुप्रसिद्ध सरोद वादक उस्ताद हाफिज़ अली खाँ जी हुए जिनका सरोद वादन अद्वितीय था। इनके घराने की सबसे बड़ी उपलिब्ध है रबाब में परिवर्तन, ध्रुपद अंग की वादन शैली और उसका विकास। सरोद के प्रसिद्ध बंगश घराने में हाफिज अली खाँ पाँचवी पीढ़ी के वंशज अपने संगीत और अपने स्ट्रोक की क्रिस्टल स्पष्ट टोन के गीतात्मक सौंदर्य के लिए जाने जाते थे। उस्ताद हाफिज़ अली खाँ की वादन शैली का विशिष्ट रूप था कि इनके वादन में सौंदर्य तत्व कभी लुप्त नहीं होता था। सफाई, सुरीलापन, मींड का काम, स्वर विस्तार की गहराई तथा बारीकियां उस्ताद हाफिज़ अली खाँ के वादन में विद्यमान थी। उनके वादन में ध्रुपद अंग व बीन अंग का पूर्ण प्रभाव था।

प्रस्तावना :

भूमिका

कला की सुन्दर रचना करने वाला कलाकार कहलाता है। कलाकार वास्तविकता को मौलिकता में बदल देता है। वह अपने हृदय की अभिव्यक्ति को अपनी कला द्वारा प्रदर्शित करता है प्रत्येक कलाकार की गायन अथवा वादन शैली की कुछ अलग ही विशेषताएँ होती हैं जो उसे अन्य कलाकारों से अलग करती हैं। उस कलाकार की शैली में कुछ उसके घराने की विशेषताएँ होती हैं। जो उसके गायन तथा वादन में झलकती हैं विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व वाला व्यक्ति जो प्रतिभा द्वारा कलाकृति की रचना करता है, कलाकार कहलाता है। अपने घराने की विशेषताओं के साथ साथ इन नवीनताओं के कारण ही वह अपनी अलग पहचान बनाता है।

हिन्दुस्तानी संगीत के अन्तर्गत आधुनिक समय में ऐसे कलाकार जो उस्ताद माने जाते हैं और जिनके साथ हिन्दुस्तानी संगीत का इतिहास जुड़ा है, उनमें से एक हैं प्रसिद्ध सरोद वादक स्वर्गीय उस्ताद हाफिज़ अली खाँ साहब। उस्ताद हाफिज़ अली खाँ का जन्म सन् 1888 ई॰ में जीवाजी नामक मोहल्ले में उस ऐतिहासिक इमारत में हुआ, जो उस्ताद साहब के पूर्वजों को ग्वालियर महाराजा की ओर से संगीत सेवा हेतू भेंट दी गई थी। इनका वंश सरोदियों का वंश रहा है। उस्ताद हाफिज़ अली खाँ जी के दादा उस्ताद गुलाम अली खाँ एक कुशल व प्रसिद्ध सरोद वादक थे। यह पहले वाजिद अली शाह लखनऊ के दरबार में और फिर उसके बाद ग्वालियर के महाराजा जीवाजी राव सिन्धिया के दरबार में सम्मानित कलाकार के रूप में रहे। उसी समय से ही ग्वालियर इस परिवार का निवास स्थान हो गया। उस्ताद जी की वादन शैली पर चर्चा करने से पहले सर्वप्रथम हम उस्ताद जी के घराने की वादन शैली पर प्रकाश डालेंगे।

बंगश घराने की वादन शैली

इस घराने के वादन में गायकी अंग व ध्रुपद अंग के प्रभाव के साथ–साथ कहीं कहीं रबाब शैली का प्रभाव भी झलकता है गुलाम अली साहब के तीन पुत्र थे– हुसैन खाँ, मुराद अली, व नन्नें खाँ। इनके प्रथम दो पुत्र हुसैन खाँ व मुराद अली जी ने पिता की गत तोड़ा पद्धति को कायम रखा तथा अपने वादन में सैनी बीनकार व सुरश्रृंगार वादकों के प्रभाव को ग्रहण किया। यह भी माना जाता है कि इन्होंने सर्वप्रथम सरोद पर पूर्वांग आलाप व विलम्बित गत प्रारम्भ किया। ये दोनों भाई सरोद पर सब अंगों को बजाने में सूक्ष्म थे परन्तु नन्ने खाँ जी पखावज के साथ परन व गत बजाने में कुशल थे।

पदम्भूषण उस्ताद हाफिज़ अली खाँ साहब की वादन शैली

- उú हाफिज़ अली खाँ के सरोद वादन को सुनने के पश्चात् पता चलता है कि: पुराने कलाकारों के समान इनके सरोद वादन में भी रबाब शैली का कुछ अंशों में निर्वाह हुआ है। पुराने कलाकारों के समान इनके सरोद वादन में भी रबाब शैली का कुछ अंशों में निर्वाह हुआ है।
- सरोद वादन में गायकी अंग का समावेश।
- आलाप में बीकारों के घराने का प्रभाव झलकता है। ध्रुपद की तालीम होने के कारण से खरज में विस्तार–ध्रुपद शैली का प्रभाव दर्शाता है।
- किसी किसी स्थान पर गायकी अंग व कहीं कहीं पर ठुमरी जैसा बोलबनाव का प्रयोग हुआ है।
- वादन के प्रारम्भ में ही राग को दर्शाने वाले स्वर समूह का प्रयोग। तत्पश्चात् षड़ज स्थापित करना।
- चैनदारी का आलाप जिसमें मींड, मुर्की और गमक का यथास्थान प्रयोग।
- जोड़ ध्रुपद के नोमतोम के आलाप से प्रभावित
- जोड़ के उत्तरार्ध में दुगुन की छोटी तानों का बराबर की लय में प्रयोग।
- कम अवधि के राग प्रस्तुतीकरण में आलाप और जोड़ ये दोनों भाग पृथक पृथक न दिखाकर आलाप के ही उत्तरार्ध की लय बढ़ाकर पेश करना।
- एक आघात में आंस के सहारे से बहुत से स्वरों का प्रयोग तथा स्वर की आंस समाप्ति पर डड़ा बोल का प्रयोग।
- किन्हीं दो स्वरों की एक आघात में पुनरावृति।
- मन्द्र सप्तक के आलाप के मध्य में ही मध्य सप्तक के स्वरों को दिखाकर पुनः मन्द्र सप्तक के स्वर पर जाना ऐसा कई बार प्रयोग।
- दूर दूर के स्वरों का एक के बाद एक प्रयोग जिसमें लय दिखाई जाती है।
- जोड़ में चिकारी व झाला नहीं है।
- जोड़ में इकहरे स्वर की तानों का प्रयोग तथा तान के अन्त में ड्रा बोल का प्रयोग।
- किसी स्वर समूह को केन्द्र बनाकर उससे अनेक स्वर समूहों को बनाना।
- जोड़ में घसीट द्वारा अलग अलग सप्तकों के स्वर समूहों का प्रयोग।
- आलाप व जोड़ सुव्यवस्थित व लम्बी अवधि का है। अतः यह कह सकते हैं कि वर्तमान समय के आलाप जोड़ का बीज रूप उस्ताद हाफिज़ अली खाँ के आलाप जोड़ में मिलता है।
- इनकी सभी गतें तीन ताल में प्राप्त हुई हैं।
- किसी किसी राग में गत की एक पंक्ति बजाकर पूरी गत रचना पर विशेष बल नहीं।
- तालबद्ध स्वर विस्तार में राग के मुख्य स्वरों पर न्यास।
- स्वर विस्तार की समाप्ति कर गत को मुखड़े के स्थान पर सम पर उठाना और सम पर ही छोड़ना।
- किसी किसी गत में अंतरा नहीं है तथा तार सप्तक के स्वरों द्वारा ही इसे दर्शाया गया है।
- द्रुत गत इकहरे बोल युक्त हैं तथा अलग अलग मात्राओं से प्रारम्भ होती है। उदाहरणार्थः–

गत की पहली पंक्ति की समाप्ति पर कभी कभी एक पूरा आवर्तन जिसमें सिर्फ लय दर्शाना।

- इसके अनुसार ही परवावज पर बोल बजाना।
- अलग अलग लय की तानों का प्रयोग। तान बजाते समय चार चार की मात्रा के हिसाब से चलना।
- 8 मात्रा की तान बजाकर 8 मात्रा खाली इस प्रकार दो तीन तानों का प्रयोग। ढाई गुनी लय में तानों का प्रयोग।
- बराबर वाली लय की तानों में आरोही अवरोही स्वरों का प्रयोग, जिनमें अवरोही स्वर गमकयुक्त। इनकी पुनः ढाई गुनी लय की ताल बजाकर समाप्ति।
- इकहरे स्वर की सपाट तानों का प्रयोग।
- गत के अन्त में डिड़– डिड़ के तोड़े द्वारा परवावज के साथ लड़न्त।
- डा ड़ा डा – डा ड़ा डा – ऐसे बोलों का तोड़ा बजाते हुए झाला प्रारम्भ।
- झाला वर्तमान समय से भिन्नता लिए हुए।
- राग का समापन झाले द्वारा न करके गत का मुखड़ा बजाकर।
- झाला वर्तमान समय से भिन्नता लिए हुए।
- राग का समापन झाले द्वारा न करके गत का मुखड़ा बजाकर।

इनके वादन को सुनने के पश्चात् हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इनके वादन में यद्यपि बीन अंग व ध्रुपद अंग का पर्याप्त प्रभाव दिखता है तथापि बोलयुक्त तोड़ों व लड़न्त तथा दायें हाथ का काम तन्त्रकारी को दर्शाता है। इनके वादन में गम्भीरता, चैनदारी व स्वर माधुर्य का आभास होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.भारतीय संगीत के तन्त्री वाद्य–डॉú प्रकाश महादिक, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल–462003
2.भारतीय संगीत और संगीतज्ञ–रामलाल माथुर, क्लासिक क्लैक्शन 0–16, शील कुंज, मालवीय मार्ग, मोलन का चौराहा, सी–सकीम द्वितीय संस्करण, 2003, जयपुर–302001
3.ग्वालियर की संगीत परम्परा–डॉú अरुण बांगरे, यशोयश प्रकाशन हुबली, कर्नाटक
4.My Father our fraternity–Ustad Amjad Ali Khan Publishers, Roli Books.
5.The last interview of Haafir Ali Khan by Lalita Khanna, Published on Lipika, November 1972.

Poonam Suryal
Department of Music, Panjab University, Chandigarh.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org